पाठ 7. काली परी

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को यह समझाना है कि मनुष्य में निहित गुण ही सर्वोपरि होते हैं। रूप-रंग मानवीय मूल्यों से बड़ा नहीं होता इसलिए जीवन में सदैव आंतरिक गुणों को महत्व देना चाहिए, बाह्य आकर्षण को नहीं।

पाठ का सारांश

किसी नगर के राजकुमार की इच्छा थी कि वह बड़ा होने पर किसी परी से विवाह करे। राजा ने परीलोक का पता लगाने की कोशिश की मगर कोई परीलोक का पता न बता सका। जब राजकुमार बड़ा हुआ तब किसी के कहे अनुसार, राजकुमार चित्रगिरी पर्वत की ओर चल पड़ा। वहाँ सरोवर के किनारे उसकी मुलाकात कजली नाम की एक लड़की से हुई। लड़की का रंग काला था किंतु वह देखने में बहुत ही सुंदर थी। राजकुमार उसको परी समझकर राजमहल में ले आया तथा उससे विवाह कर लिया। किसी का भी ध्यान कजली के गुणों पर न जाता, सब उसका रंग ही देखते। एक दिन राजकुमार की ज़िद पकड़ ली कि कजली उसे अपना परियों वाला रूप दिखाए। कजली ने कार्तिक की पूर्णिमा को अपना असली रूप दिखाने की बात कही। नगरवासी भी पूर्णिमा के दिन कजली का असली रूप देखने पहुँच गए। परंतु कजली वहाँ से सदा के लिए चली गई। राजकुमार सोचता रहा कि शायद यही परियों का वास्तविक परिचय है।

अध्यापन संकेत

प्रस्तुत पाठ का आदर्श वाचन करें। पाठ से मिलने वाली सीख पर बच्चों से चर्चा करें। बच्चों से पूछें तथा समझाएँ–

- क्या तुम्हें परियाँ अच्छी लगती हैं, तुमने दादा-दादी से परियों की कहानियाँ तो सुनी होंगी। यदि कोई कहानी तुम्हें याद हो तो सुनाइए।
- पाठ में आए कठिन शब्दों को समझाइए।
- समझाइए, हमें लोगों को उनके रूप-रंग से नहीं बल्कि उनके गुणों एवं काम से महत्व देना चाहिए।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।